आलिया भट्ट के साथ काम करना है सपना : किरिल

किरिल कुजनियतसोव इन दिनों भारतीय दर्शकों के बीच भी अच्छी-खासी चर्चा में हैं. रशियन फिल्म फेस्टिवल 2025 की स्पेशल स्क्रीनिंग में उनकी मौजूदगी ने फेस्टिवल के प्रति उत्सुकता को और बढ़ा दिया. उन्होंने अपनी बातचीत में सिर्फ भारतीय फिल्म इंडस्ट्री की तारीफ ही नहीं की, बल्कि भारतीय कलाकारों के प्रति अपनी पसंद भी खुलकर जाहिर की.

किरिल ने बताया कि उन्हें हिंदी फिल्मों की भावनात्मक गहराई और भारतीय कलाकारों की ईमानदार परफॉर्मेंस बेहद आकर्षित करती है. उन्होंने आलिया भट्ट की तारीफ करते हुए कहा कि 'गंगूबाई' में उनकी एक्टिंग देखकर वह दंग रह गए थे. उन्होंने यह भी माना कि आलिया जितनी बहुमुखी, प्रतिभाशाली और दमदार परफॉर्मर हैं, उनके साथ स्क्रीन शेयर करना किसी भी एक्टर के लिए एक सपना होगा.

रणबीर कपूर पर दिए उनके 'डर' वाले बयान ने मीडिया में हल्की हंसी के साथ बड़ी खबर भी बना दी. किरिल ने कहा, 'रणबीर शानदार एक्टर हैं, लेकिन 'एनिमल' में उन्हें देखकर कोई भी थोड़ा डर जाए!' उन्होंने यह बात मज़ाकिया अंदाज़ में कही, लेकिन इससे इस इंटरव्यू को एक मनोरंजक मोड़ मिल गया. किरिल ने आगे भारत-रूस सहयोग पर बात करते हुए कहा कि दो देशों के कलाकारों और फिल्म निर्माण कंपनियों के बीच बढ़ते संपर्क से आने वाले समय में कई को-प्रोडक्शन, संयुक्त प्रोजेक्ट और नए अवसर पैदा होंगे.

टॉक्सिक पोस्टर से फिर छाए यश

दक्षिण भारतीय फिल्मों के मेगास्टार यश की आने वाली फिल्म टॉक्सिक: ए फेयरी टेल फॉर ग्रोन-अप्स का नया पोस्टर रिलीज हो गया है. टॉक्सिक: ए फेयरी टेल फॉर ग्रोन-अप्स ने अपनी रिलीज़ डेट 19 मार्च 2026 के लिए ऑफिशियल काउंटडाउन शुरू कर दिया है, और आज से ठीक 100 दिन बचे हैं. वर्ष 2026 की सबसे ज्यादा चर्चा में रहने वाली फिल्मों में से एक, ये फिल्म हर अपडेट के साथ और तगड़ी हलचल मचा रही है. मूड और हाई करने के लिए मेकर्स ने एक जबरदस्त नया पोस्टर भी उतारा है.इसमें रॉकिंग स्टार यश एक दमदार अंदाज़ में दिख रहे हैं.खूनी बाथटब में बैठे हुए, रग्ड, सेक्सी लुक में, और बाहर आती रोशनी को देखते हुए. चेहरा नहीं दिखता, पर टैटू वाला बॉडी लैंग्वेज और बाइसेप्स वाला एटीट्यूड साफ बता देता है कि किरदार कितना खतरनाक होने वाला है.

कार्तिक ने ठुकराया था भूल भुलैया का ऑफर

बॉलीवुड स्टार कार्तिक आर्यन ने सऊदी अरब में आयोजित रेड सी इंटरनेशनल फ़िल्म फ़ेस्टिवल में हिस्सा लेते हुए एक दिलचस्प खुलासा किया कि उन्होंने शुरुआत में सुपरहिट हॉरर-कॉमेडी फ़्रैंचाइज़ी 'भूल भुलैया' का ऑफर ठुकरा दिया था. भारत का प्रतिनिधित्व कर रहे कार्तिक ने बताया कि जब यह फ़िल्म पहली बार उनके पास आई, तब इसके पास कोई तैयार कहानी नहीं थी, सिर्फ़ एक सीक्वल बनाने की शुरुआती सोच थी, जिसने उन्हें प्रभावित नहीं किया और वे इसे करने के लिए तैयार नहीं थे.

उन्होंने बताया कि निर्माता भूषण कुमार ने उन्हें कहानी की संभावनाओं और फ़िल्म की पहुंच के बारे में विस्तार से समझाया, जिसके बाद टीम ने मिलकर इसकी स्क्रिप्ट पर लंबे समय तक काम किया और धीरे-धीरे फ़िल्म एक मजबूत और मनोरंजक रूप में ढलने लगी. कार्तिक ने कहा कि आज उन्हें बेहद खुशी है कि उन्होंने इस प्रोजेक्ट को स्वीकार किया, क्योंकि 'भूल भुलैया 2' पोस्ट-कोविड दौर में दर्शकों को फिर से थिएटरों तक खींचने वाली पहली बड़ी सफल फिल्मों में से एक बनी, जिसने न सिर्फ़ बॉक्स ऑफिस पर शानदार कमाई की, बल्कि उनके करियर को नई ऊंचाई दी और उन्हें युवा सुपरस्टार की कतार में मजबूती से स्थापित किया.

कार्तिक ने मुस्कुराते हुए बताया कि अब जहां भी वे जाते हैं, छोटे बच्चे उन्हें प्यार से 'रूह बाबा' कहकर बुलाते हैं, जो उनके लिए एक खास जुड़ाव और सम्मान जैसा महसूस होता है.

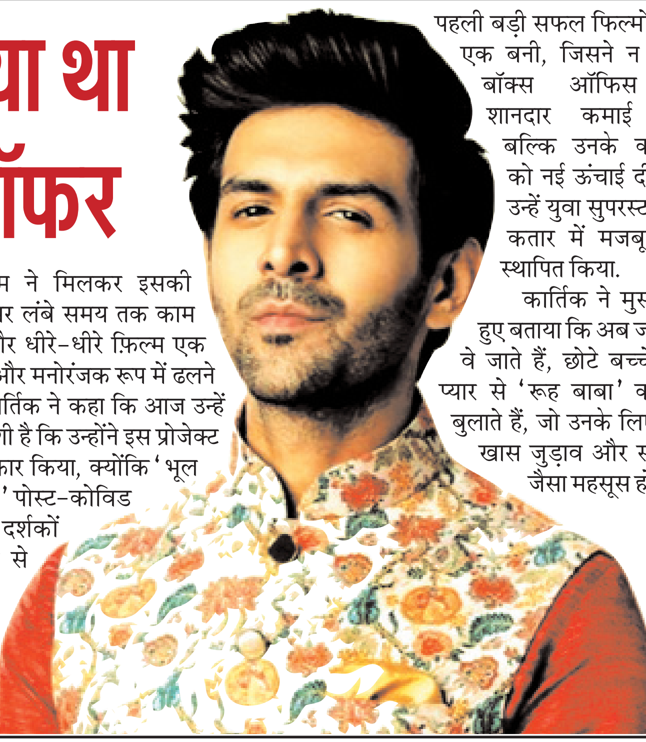

अक्षय को मिलना चाहिए ऑस्कर : फराह

फिल्म निर्देशक और कोरियोग्राफर फराह खान अपनी बेबाक राय और खिलखिलाती ऊर्जा के लिए जानी जाती हैं. इस बार उन्होंने अभिनेता अक्षय खन्ना की तारीफ करके सोशल मीडिया पर हलचल मचा दी. फराह ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर एक वीडियो पोस्ट किया, जिसमें उन्होंने अक्षय खन्ना की हालिया फिल्म 'धुरंधर' में किए गए अभिनय को इतना दमदार बताया कि उनके मुताबिक अक्षय को इसके लिए 'ऑस्कर' मिलना चाहिए.

यह बात उन्होंने न सिर्फ़ लिखकर कही, बल्कि इसे बोलने के लिए एक बेहद रचनात्मक और मजेदार तरीका अपनाया—अपनी ही फिल्म 'तीस मार खान' का रेफरेंस! वीडियो में दो क्लिप साथ दिखाए गए थे एक तरफ अक्षय खन्ना 'धुरंधर' में रहमान डकैत के किरदार में दिखते हैं, जहां उनकी तीव्रता और अभिव्यक्ति पूरी तरह दर्शकों को चौंकाती है. दूसरी ओर 'तीस मार खान' का वह आइकॉनिक सीन है, जिसमें अक्षय कुमार के किरदार द्वारा अक्षय खन्ना को देखकर कहा जाता है 'वो रहा मेरा सुपरस्टार, मेरा ऑस्कर!'

फराह ने यही लाइन रिपीट करते हुए यह दिखाया कि अक्षय खन्ना ने 'धुरंधर' में जिस तरह का परफॉर्मेंस दिया है, वह वास्तव में किसी बड़े अंतरराष्ट्रीय सम्मान का हकदार है. फराह खान का यह व्यंग्य से भरा, फिर भी सच्ची भावना वाला पोस्ट देखते ही सोशल मीडिया पर तुफानी प्रतिक्रियाएं आने लगीं. फैंस ने भी फराह की बात का समर्थन किया और कहा कि अक्षय खन्ना हमेशा से एक बेहतरीन कलाकार रहे हैं,

गुजराती अभिनेता की हुई 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' में एंट्री

स्टार प्लस का आइकॉनिक शो 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' में मशहूर गुजराती अभिनेता श्रुहद गोस्वामी की एंट्री हो गयी है. शो क्योंकि सास भी कभी बहू थी अब एक नए और मज़ेदार मोड़ की ओर बढ़ रहा है, क्योंकि मशहूर गुजराती अभिनेता श्रुहद गोस्वामी शो में ख़ास एपिसोड्स के लिए एंट्री करने वाले हैं.

गुजराती सिनेमा और टीवी में अपनी दमदार एक्टिंग के लिए पहचाने जाने वाले श्रुहद गोस्वामी को, धार्मिक हिट फ़िल्म लालो, कृष्ण सदा सहायते में कृष्ण का किरदार निभाने के लिए खूब सराहा गया है.

फैंस हुए हिना खान पर फिदा

सिल्वर ज्वेलरी और ग्लॉसी मेकअप ने जीता दिल

टेलीविजन की पॉपुलर एक्ट्रेस हिना खान ने एक बार फिर अपने फैशनेबल अंदाज़ से इंटरनेट पर आग लगा दी है. खूबसूरती, परफेक्ट स्टाइल, और कॉन्फिडेंस इन तीनों का ऐसा शानदार कॉम्बिनेशन शायद ही किसी और में देखने को मिले, और हिना की लेटेस्ट तस्वीरें इसका बेहतरीन सबूत हैं.

एक्ट्रेस ने सोशल मीडिया पर ब्लैक सिक्विन गाउन में अपनी कई तस्वीरें शेयर कीं, जिन्हें देखकर फैंस की धड़कनें सचमुच तेज हो गईं. हिना ने जैसे ही ये तस्वीरें अपने सोशल मीडिया हैंडल पर पोस्ट कीं, फैंस के रिएक्शंस थमने का नाम ही नहीं ले रहे. ब्लैक कलर खुद में ही पावर और एलीगेंस की पहचान है, और जब इसे हिना खान जैसे फैशन-फ़ॉरवर्ड स्टार ने कैरी किया, तो लुक स्वाभाविक रूप से धमाकेदार होना ही था.

इस सिक्विन गाउन का डिजाइन यूनिक है, जो एक्ट्रेस के फिगर को खूबसूरती से उभारता है. फिटिंग और फॉल दोनों कमाल के हैं, जिससे पूरा आउटफिट तस्वीरों में चमक उठता है. हिना ने अपने इस गाउन को सिल्वर ज्वेलरी के साथ पेयर किया, जिसमें स्टोन-स्टडेड ईयररिंग्स और एक स्टाइलिश रिंग शामिल है. ज्वेलरी का ये चुनाव उनके ब्लैक आउटफिट को एक रॉयल और ग्रेसफुल टच देता है. मेकअप और हेयरस्टाइल भी हिना के ग्लैम को नई ऊंचाई पर ले जाते हैं. उन्होंने ग्लॉसी मेकअप लुक चुना है, जिसमें हाईलाइटेड चीक्स, न्यूड-टोन लिप्स और शिमरी आईशैडो उनकी तस्वीरों में एक अलग ही ग्लो लेकर आता है.

ज़ी टीवी पर हाल ही में शुरू हुआ नया शो 'जगद्धात्री' अपनी शुरुआत से ही दर्शकों का खूब प्यार पा रहा है. ड्रामा, रहस्य और एक्शन से भरी इसकी कहानी में सोनाक्षी बत्रा (जगद्धात्री), फरमान हैदर (शिवाय), सायंतनी घोष (माया) और कई अन्य कलाकार नजर आ रहे हैं. ये कहानी 'जगद्धात्री' के उस सफर को दिखाती है, जिसमें घर में अनदेखी-सी रहने वाली एक साधारण लड़की आगे बढ़कर एक निडर अंडरकवर एजेंट बन जाती है. अपनी दिलचस्प और तेज़ रफ्तार कहानी के चलते यह शो बहुत ही कम समय में दर्शकों का पसंदीदा बन गया है.

कहानी के आगे बढ़ने के साथ अब दर्शक एक बेहद रोमांचक ट्रैक देख रहे हैं. हाल के एपिसोड्स में तपस्या (जगद्धात्री की बहन) और रुद्र (माया का चचेरा भाई) की सगाई के साथ कहानी ने नया मोड़ लिया है. यह सीक्वेंस इसलिए भी खास है क्योंकि इसी दौरान शो की दो दमदार महिला किरदार, माया और जगद्धात्री, पहली बार आमने-सामने आती हैं. इस खास पल को लेकर दर्शकों की उत्सुकता का आलम ही कुछ और है. दर्शक बेसब्री से देखना चाहते हैं कि इन दोनों के बीच आगे क्या इक्वेशन बनती है.

इस अहम सीक्वेंस की शूटिंग के बारे में बात करते हुए एक्ट्रेस सोनाक्षी बत्रा ने टीवी की पॉपुलर एक्टर सायंतनी घोष के साथ काम करने के अपने अनुभव को बेहद खास बताया.

सोनाक्षी बत्रा ने सायंतनी घोष के साथ साझा किए अनुभव

पहाड़ हमें सुकून भी देते हैं और रोमांच भी!

दुनियाभर में जब पहाड़ों की खूबसूरती और शांत माहौल का जश्न मनाया जा रहा है, ऐसे में एण्डटीवी के मशहूर कलाकार भी बता रहे हैं कि वो क्यों पहाड़ों के दीवाने हैं. अपने दमदार किरदारों से लोगों की पसंद बने इन कलाकारों ने पहाड़ों की अपनी पसंदीदा यात्राओं के बारे में बताया और इनसे जुड़ी यादें साझा कीं. इनमें शामिल हैं पारस अरोड़ा ('घरवाली पेडवाली' के जीतू), संजय चौधरी ('हप्पू की उलटन पलटन' के कमलेश) और विदिशा श्रीवास्तव ('भाबीजी घर पर हैं' की अनीता भाबी).

आगामी शो 'घरवाली पेडवाली' में जीतू का किरदार निभा रहे पारस अरोड़ा कहते हैं, 'पहाड़ों का मेरे दिल में एक अलग ही स्थान है वे मुझे हर पल जीने, सुकून महसूस करने और बिल्कुल आज़ाद होने का एहसास कराते हैं. मैं पूरी तरह से 'माउंटेन पर्सन' हूं! ट्रेकिंग करना, नए रास्तों को खोजना और घुमावदार सड़कों पर बाइक चलाना मुझे बेइंतहां खुशी देता है. पिछले साल मैंने ऊटी की सैर की, जो मेरे जीवन की सबसे शांत लेकिन रोमांचक यात्राओं में से एक रही नदी किनारे कैंपिंग, छुपे हुए झरनों को खोजना और ऐसे सूर्यास्त देखना जो किसी पेंटिंग जैसे लगते हों.

हाल ही में मैं हिमाचल प्रदेश गया और अपनी बाइक भी साथ ले गया. सूर्योदय के समय धुंध से ढकी पहाड़ी मोड़ों पर चलना, ठंडी हवा का चेहरे को छूना और पाइन की खुशबू का माहौल में घुलना सब कुछ बेहद अलौकिक था. कुछ रास्ते काफी खड़े और फिसलन भरे थे, जिससे सफर रोमांचक हो गया. लेकिन जब मैं ऊपर पहुंचा और नीचे बादलों को तैरते हुए देखते हुए गरम चाय की चुस्की ली, तो वह अनुभव वाकई बेहद सुकूनभरा था.

बादाम शरीर को हर मौसम में देता है मजबूती

सर्दियों में शरीर को अतिरिक्त ऊर्जा, गर्माहट और रोगों से लड़ने की ताकत की जरूरत होती है, और ऐसे में बादाम एक ऐसा मेवा है जो स्वास्थ्य के लिए संपूर्ण पोषण का ख़ज़ाना माना जाता है.

बादाम में मौजूद प्रोटीन, हेल्दी फैट, विटामिन-ई, कैल्शियम, मैग्नीशियम, फाइबर और एंटीऑक्सीडेंट न केवल शरीर को मजबूत बनाते हैं, बल्कि ठंड में होने वाली कई आम परेशानियों से भी बचाते हैं.

विशेषज्ञों के अनुसार रोज़ 5-7 भीगे हुए बादाम खाना हृदय, दिमाग और हड्डियों के लिए बेहद लाभदायक होता है. सर्द मौसम में प्रतिरोधक क्षमता (इम्यूनिटी) कम होने लगती है, ऐसे में बादाम का सेवन शरीर को वायरस और बैक्टीरिया से लड़ने की क्षमता देता है. इसमें मौजूद विटामिन-श्व और एंटीऑक्सीडेंट त्वचा को रूखापन और फटने से बचाते हैं, इसलिए सर्दियों में बादाम का नियमित सेवन त्वचा को प्राकृतिक नमी और चमक प्रदान करता है. बादाम दिमाग को तेज़ करने के लिए भी प्रसिद्ध है. ओमेगा-3 फैटी एसिड और एंटीऑक्सीडेंट याददाश्त बढ़ाते हैं और मानसिक तनाव को कम करते हैं, इसलिए बच्चों, विद्यार्थियों और दिमाग़ी काम करने वाले लोगों के लिए यह बेहद उपयोगी माना जाता है. सर्दियों में अक्सर जोड़ों में दर्द या अकड़न बढ़ जाती है, ऐसे में बादाम में मौजूद कैल्शियम और मैग्नीशियम हड्डियों को मजबूत करते हैं और गठिया जैसी समस्याओं से राहत देते हैं.

अलसी की खेती : कम लागत में ज्यादा मुनाफा

बढ़ती खेती लागत और बदलते मौसम के बीच किसानों के लिए कम जोखिम में अधिक मुनाफ़ा दिलाने वाली फसलों की तलाश हमेशा बनी रहती है, और ऐसे में अलसी की खेती एक बेहतरीन विकल्प के रूप में तेजी से उभर रही है. अलसी या लिनसीड न सिर्फ कम लागत में तैयार हो जाती है बल्कि इसके तेल और खल की बाजार में स्थिर और उच्च मांग रहती है, जिससे किसानों को अच्छी आय प्राप्त होती है.

अलसी की खेती पर औसतन एक एकड़ में लगभग 6,000 से 8,000 रुपये तक की ही लागत आती है, जिसमें बीज, हल्की खाद, जुताई और सीमित सिंचाई का खर्च शामिल है, क्योंकि यह फसल कम पानी में भी अच्छा उत्पादन देने की क्षमता रखती है. बीज दर भी केवल 8-10 किलो प्रति एकड़ ही पर्याप्त होती है, जो इसे और भी किफायती बनाती है. मौसम और किस्म के अनुसार 110-120 दिनों में तैयार होने वाली इस फसल से एक किसान को औसतन 5-7 क्विंटल तक उत्पादन मिल जाता है, जबकि बाजार में अलसी के दाम 7,000 से 10,000 रुपये प्रति क्विंटल तक बने रहते हैं. इस प्रकार एक एकड़ से 35,000 से 60,000 रुपये तक की कुल आय आसानी से प्राप्त हो सकती है, और लागत घटाने पर शुद्ध लाभ 25,000 से 50,000 रुपये प्रति एकड़ तक पहुंच जाता है. खेती की प्रक्रिया भी सरल है—अक्टूबर-नवंबर में बुवाई की जाती है और हल्की-सी दोमट या मध्यम मिट्टी इसके लिए सबसे उपयुक्त मानी जाती है. खेत को दो-तीन जुताइयों से भुरभुरा बना लेने के बाद बीज को छिड़काव या ड्रिल विधि से बोया जाता है.

अलसी में रोग-कीट का प्रकोप अपेक्षाकृत कम होता है, हालांकि शुरुआती अवस्था में पत्तों के झुलसा रोग से बचाव के लिए हल्का छिड़काव करना लाभकारी रहता है. कुल मिलाकर, कम लागत, कम पानी, कम जोखिम और बेहतर बाजार मूल्य के कारण अलसी की खेती किसानों के लिए एक स्थिर, कम-खर्चीला और मुनाफ़ा-केंद्रित विकल्प बनती जा रही है, जो न केवल उनकी आमदनी बढ़ाती है बल्कि खेत की उर्वरता बनाए रखने में भी मदद करती है और इसलिए इसे आधुनिक खेती के लिए एक स्मार्ट क्रॉप माना जा रहा है.

मसाला बाजार में बढ़ती मांग, लहसुन की खेती से बड़ा लाभ

बढ़ते मसाला बाजार और लगातार अच्छे दामों के कारण लहसुन की खेती आज किसानों के लिए अत्यधिक लाभकारी विकल्प बनती जा रही है, खासकर उन किसानों के लिए जो कम जोखिम और स्थिर आय चाहते हैं. लहसुन एक ऐसी फसल है जिसकी मांग घरेलू और औद्योगिक दोनों स्तरों पर सालभर बनी रहती है, इसलिए किसानों को इसका मूल्य कभी भी अत्यधिक गिरता हुआ नहीं मिलता. लहसुन की खेती की लागत अन्य मसाला फसलों की तुलना में थोड़ी अधिक होती है, लेकिन इसके मुकाबले उत्पादन और बाजार मूल्य इतना अच्छा मिल जाता है कि आखिर में मुनाफा संतोषजनक रहता है.

एक एकड़ में औसतन 12,000 से 18,000 रुपये तक की लागत आती है, जिसमें बीज लहसुन की कलियों का खर्च सबसे बड़ा भाग होता है क्योंकि एक एकड़ में 80-100 किलो बीज की जरूरत पड़ती है. अच्छी उपज के लिए दोमट से लेकर हल्की काली मिट्टी सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है, और बुआई सामान्यत: अक्टूबर से नवंबर की ठंड में की जाती है ताकि पौधा तेजी से विकसित होकर मार्च-अप्रैल तक तैयार हो सके.

खेत को अच्छी तरह भुरभुरा बनाना और क्यारियां बनाकर पंक्ति में कलियों को 8-10 सेंटीमीटर की दूरी पर लगाना बेहतर माना जाता है. लहसुन को सिंचाई की अत्यधिक जरूरत नहीं होती, लेकिन शुरुआती वृद्धि और कंद बनने के समय हल्की और समय पर सिंचाई अनिवार्य होती है. खाद के रूप में 50-60 किलो नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटाश का संतुलित प्रयोग उपज बढ़ाने में सहायक होता है. रोगों में झुलसा और गलन लहसुन में सामान्य हैं, जिनसे बचाव के लिए फफूंदनाशक का समय-समय पर छिड़काव और पौधों के बीच उचित दूरी बनाए रखना जरूरी है.

एक एकड़ लहसुन से किस्म और प्रबंधन के आधार पर 40-55 क्विंटल तक उत्पादन हासिल किया जा सकता है, जबकि बाजार में लहसुन के दाम 30 से 120 रुपये प्रति किलो की सीमा में अक्सर बने रहते हैं, जिससे किसानों को लगभग 80,000 से 2,50,000 रुपये तक कुल आय प्राप्त हो सकती है. लागत घटाने के बाद भी शुद्ध लाभ 50,000 से 2 लाख रुपये प्रति एकड़ तक पहुंच सकता है, जो इसे अत्यंत लाभदायक फसल बना देता है. तेज सुगंध, औषधीय गुण और खाद्य उद्योग में बढ़ती मांग के कारण लहसुन लंबे समय तक बाजार में टिके रहने वाली फसल है और मौसम के अनुकूल रहकर किसानों को निरंतर आय पहुंचाती है. इन सभी गुणों के चलते लहसुन की खेती आधुनिक किसानों के लिए न केवल आर्थिक सुरक्षा प्रदान करती है बल्कि मसाला फसलों में एक मजबूत और स्थिर विकल्प भी साबित होती है.

मुर्गियों की बेहतर देखभाल से सफल मुर्गी पालन

मुर्गी पालन आज गांवों में तेजी से बढ़ता एक ऐसा व्यवसाय है जिसमें सफलता की असली कुंजी मुर्गियों की सही देखभाल है. खेती के साथ-साथ किसान आसानी से मुर्गी पालन कर सकते हैं, लेकिन अच्छे परिणाम के लिए जरूरी है कि मुर्गियाँ स्वस्थ, साफ वातावरण में पलें और उन्हें सही पोषण मिलता रहे.

मुर्गियों की देखभाल जितनी अच्छी होगी, उत्पादन उतना बेहतर होगा और बीमारी का खतरा कम रहेगा. इसलिए मुर्गी पालन करने वाले किसानों को शुरुआत से ही कुछ बुनियादी बातों पर पूरा ध्यान देना चाहिए. सबसे पहले मुर्गियों के रहने का स्थान साफ, हवादार और सुरक्षित होना चाहिए. शेड हमेशा सूखा और रोशनी से भरपूर हो, क्योंकि नमी और गंदगी रोगों को बढ़ावा देती है. फर्श पर बुरादा या भूसा बिछाना चाहिए जिसे समय-समय पर बदलते रहना आवश्यक है. गर्मियों में शेड में पर्याप्त वेंटिलेशन और पंखे होने चाहिए, जबकि सर्दियों में मुर्गियों को ठंड से बचाने के लिए मोटी बिछावन और हल्की गर्म व्यवस्था जरूरी होती है. शेड में चूहे, सांप या अन्य जानवरों का प्रवेश पूरी तरह रोकना चाहिए क्योंकि ये मुर्गियों के लिए खतरनाक साबित हो सकते हैं.

मुर्गियों के भोजन पर ध्यान देना उनकी देखभाल का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है. संतुलित आहार में दाना, मक्का, सोयाबीन खल, खनिज मिश्रण और हरी घास शामिल होनी चाहिए. छोटे चूजों को स्टार्टर फीड, बढ़ती उम्र वाली मुर्गियों को ग्रोवर फीड और अंडे देने वाली मुर्गियों को लेयर फीड देना जरूरी है ताकि उनकी शारीरिक वृद्धि और स्वास्थ्य ठीक रहे. मुर्गियों में रोग नियंत्रण उनकी देखभाल का दूसरा अहम हिस्सा है.

मुर्गियों की देखभाल पर जितना अधिक ध्यान दिया जाएगा, मुर्गी पालन उतना ही सफल होगा. साफ-सुथरा वातावरण, संतुलित आहार, समय पर टीकाकरण और नियमित निगरानी मुर्गियाँ स्वस्थ रहेंगी, तेजी से बढ़ेंगी और मुर्गी पालन एक स्थिर और सफल व्यवसाय बन जाएगा.